मद्रित पष्ठों की संख्या : 8

PGDT-03

अनवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी.जी.डी.टी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर. 2021

पी.जी.डी.टी.-03 : व्यावहारिक अनवाद के विविध स्तर और क्षेत्र

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या* ***1*** *का उत्तर लगभग* ***750*** *शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए निर्धारित अंक उसके सम्मख दिए गए हैं।*

1. आश अनवाद से क्या तात्पर्य है ? आश अनवाद की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 20

2. (क)निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनवाद कीजिए : 10

(i) Genre is a key means by which we categorise the many forms of literature.

(ii) The previous editions of their work have been out of print now for almost six months.

(iii) The character of Vidya is based on the life of a women I know.

(iv) What was the net gain from the project in terms of addressing women's needs ?

(v) Distance Educators have also recognised the need to provide opportunities for social interaction.

(ख) निम्नलिखित वाक्यों का अंग्रेजी में अनवाद कीजिए : 10

(i) वैसे तो चंद्रमा की सतह से संबंधित बहत-सी जानकारियाँ हमारे पास हैं, लेकिन हम इससे आगे की जानकारियाँ एकत्रित करना चाहते हैं।

(ii) आगे के सफर में ये दोनों कलाकार एक साथ मिलकर क्या नया करते है, यह देखना रुचिकर होगा।

(iii) अगर सात दिन में खडे पानी को उडेल दिया जाए या बदल दिया जाए, तो डेंग का मच्छर पनप नहीं पाएगा।

(iv) मैंने जितनी भी मेहनत की है, उसका फायदा मझे इस वर्ष आयोजित खेल प्रतियोगिताओं में मिला है।

(v) हमारे पास कई विकल्प हैं। हमें उनके सही इस्तेमाल का तरीका ढँढना होगा।

3. निम्नलिखित अनच्छेदों में से किन्हीं **तीन** का हिन्दी में अनवाद कीजिए : प्रत्येक 15

(क) Soil is the top layer of the Earth's surface and it is an important natural resource. Soil formation takes place over a very long time. It is formed by the weathering of rocks by erosions. Fast flowing rivers carry rocks down from mountains. These rocks run against one another and break down into smaller pieces. This process continues until the rocks are finely ground. When the rivers reach the plains, they deposit this finely ground soil.

(ख) The large-scale industries employ many people. Many of the products are exported

by India and are an important source of revenue, while large-scale industries are very expensive to set up. The use of modern manufacturing techniques has made it possible to produce goods of a high quality at a cheaper cost.

(ग) The teams played in two categories Junior and Senior with boys and girls having separate teams in each category. All matches were preceded with a warm-up and coaching sessions by professionals. Players practised shooting, passing techniques and got essential tips on team coordination from the coaches. The coaches briefly explained the rules of the game to the competing team as well. The players are getting this kind of an exposure for the first time and that is the reason they are unable to play their natural games.

(घ) Magnets have south and north poles. Opposite poles of two magnets attract whereas like poles repel each other. This is the basic principle behind electromagnetic propulsion (संचालक शक्ति).

Electromagnets are similar to other magnets but their magnetic properties are temporary. They can attract metal objects. It is easy to create a small electromagnet. You only have to connect the ends of a copper wire to the negative and positive ends of an AA or D-cell. This creates a small magnetic field around the cell. If either end of the wire is removed from the cell, the magnetic field will also disappear.

4. निम्नलिखित अनच्छेदों में से किसी **एक** का अंग्रेजी में अनवाद कीजिए : 15

(क) आप रोज यह अनभव करते हैं कि पथ्वी प्रत्येक चीज को अपनी ओर खींचती है। न्यटन ने सबसे पहले पथ्वी की इस शक्ति का पता लगाया और उसे वैज्ञानिक आधार देकर 'गरुत्वाकर्षण' का नाम दिया। उन्होंने प्रकाश की गति को नापा, नक्षत्रों की गति समझी और गणित की गत्थियाँ सलझाईं। आज का विज्ञान उन्हीं खोजों पर खडा है। विज्ञान के अधिकतर नियम न्यटन के ही बनाए हए हैं। न्यटन को जाने बिना विज्ञान की बातें अधरी रह जाती हैं। वे सही अर्थों में विज्ञान जगत के पिता हैं।

(ख) इन दिनों मनष्य जिन समस्याओं को लेकर ज्यादा चिंतित हैं उनमें पर्यावरण की समस्या महत्वपर्ण

है। एक समय था जब मानव और प्रकति के बीच साहचर्य का संबंध था। ये प्राकतिक संसाधन मनष्य की मलभत जरूरतों की पर्ति के आधार थे। ऐसी स्थिति में मनष्य अपने प्राकतिक संसाधनों का दोहन तो कर ही रहा है, साथ ही उसे नकसान भी पहँचा रहा है। इस पर चर्चा करने की जरूरत है कि इस संकट को बढाने में विकास की वह प्रक्रिया कितनी जिम्मेदार है जो प्राकतिक संसाधनों के दरुपयोग पर तली है।